

ओमशान्तिः अभी स्थानी बच्चे क्या कर रहे थे। अव्यभिचारी याद में बैठे थे। एक होतो है व्यभिचारी याद, दूसरी होतो है अव्यभिचारीयाद। अव्यभिचारी याद और व्यभिचारीभावत्। भक्त जब पहले 2 शुल होतो हैं तो सभी शिव की पूजा करते हैं। ऊंचे तै ऊंचे भगवान वही है। जो बाप भी है, शिक्षक भी है। पढ़ाते हैं। क्या पढ़ाते हैं? मनुष्य से देवता बनते हैं देवता से मनुष्य बनने में तुम बच्चों को 84 जन्म लग गये। और मनुष्य से देवता बनने में एक सेकण्ड लगता है। यह तो बच्चे जानते हैं हब बाप को याद में बैठे हैं। वही हमारा टीचर भी है। सद्गुर भी है। यौग सिखाते हैं कि एकरकी याद में रहो। ऊंचे तै ऊंचे भगवान। वह खुद कहते हैं है आत्मार्थ, है बच्चों देह के सभी सम्बन्ध छोड़ो। अभी बाप स जाना है। यह पुरानी दुनिया बदल रही है। अभी यहां रहना न है। पुरानी दुनिया के विनाश के लिए ही यह वास्तव आद बनाया हुआ है। नेचरल कैलेप्रीटज़ भी मदद करते हैं। विनाश तो होता है जरूर। अभी तुम बच्चे न हो कोल्युग मैं, न सत्युग मैं। तुम पुरुषोत्तम संगम युग पर हो। यह आत्माओं को घर लौटना है। लौटने विगर नहीं दुनिया में आ नहीं सकते हैं। अभी तुम पुरुषोत्तम संगम युग पर बैठे हो। पुरुषोत्तम बनने पुरुषार्थ कर रहे हो। यह देवी-देवतार्थ है जब से ऊंचा। एहले ऊंचे तै ऊंचे हैं निराकार बाप। फिर मनुष्य हूप्टि से आजो तोहसमें ऊंचे हैं देवतार्थ। वह भी है मनुष्य परन्तु देवी गुण वाले। ऐसुः=फिर वही बनते हैं आसुरी गुण वाले। अभी फिर आसुरी गुणों से देवी गुणों में जाना पड़े। किसको? तुम बच्चों को। तुम बच्चे पढ़ रहे हो। औरौं भी भी पढ़ाते हैं। समझते हो। रिंग बाप ही ऐसैन्ज देना है। बैहद का बाप लैहद का जरूर देने आया है। अभी हद का बरसा पूरा होता है। हद के बरसे का मुदा आया कल्प पूरा है=अह=है इह हुआ अर्थात् भवित्व पूरी हुई। रावण राज्य पूरा होने का है। यह बच्चे ही जानते हैं कि हम रावण राज्य में बैठे हैं। बाप ने समझाया है 5 विकार स्त्री रावण भर की जे ल में सभी मनुष्य है। और सभी दुःख ही उठते हैं। सूखी-सूखी रेटी फ़िलती है। गन्द भी बहुत खाते हैं। नम्बरवन तो भार खाते हैं। नानक ने भी कहा है ना असैख चोर हराम खोर... वह आये हैं अभी को तथुग के समय में। तो वह भी शिक्षा देते हैं। दुनिया में क्या है। सभी हराम खोर हैं। आसुरी मनुष्य है। उन्हों को देवी-देवता बनाने लिए बाप को आजा पड़ता है। बाप के सिद्धाय मनुष्य को देवता कोई बना न सके। तुम यहां बैठे ही हो मनुष्य से देवता बनने। देवतार्थ होते हो हैं सत्युग मैं। अभी यह है कोल्युग। बहुत धर्म हो गये हैं। तुम बच्चों से रचयिता और रचना का परिचय खुद बाप बैठ देते हैं। तुम रिंग ईश्वर, भगवन, परमहमा कहते हैं। तुमको यह जला नहीं था किंवह बाप भी है, टीचर भी है, गुरु भी है। उनको कहा जाता है सद्गुरु सद्गुरु अकाल मूर्त कहा जाता है ना। तुमको आत्मा और जीवात्मा कहा जाता। वह अकाल मूर्त इस शरीर स्त्री तज्ज पर बैठा हुआ है। दह जन्म नहीं लेते जैसे तुम लेते हो। तो वह अकाल मूर्त बाप बैठ बच्चों की समझते हैं। मेरा आजना स्थ नहीं है। मैं तुम बच्चों को पावन कैसे बनाऊँगुँ रथ तौ चाहिए ना। अकाल मूर्त को भी यह तज्ज चाहिए। अकाल तज्ज मनुष्य का होता है और कोई नहीं होता। तुम हीरेक बच्चे तज्ज हो। अकाल मूर्त आत्मायहां विराजनन है। दह है इन सभी का बाप। तुमको कहा जाता है अकाल मूर्त। वह पुनर्जन्म में नहीं आते हैं। तुम आत्मार्थ पुनर्जन्म में आतो हो। दह कहते हैं क्यैं आता हो हूँ कल्प के हंगम युग पर। अर्थात् जब भक्त मार्ग की नातपूरी होती है भक्त को रात, ज्ञान को दिन कहा जाता है। यह प्रकक्षा याद करो। मुख्य है ही दो बात। अलफ़ बाप, वै बादशाही। बाप आकर बादशाही देते हैं। और बादशाही के लिए पढ़ाते हैं। इसोले उनको पाठशाला भी कहा जाता है। भगवानुवाचः। अगर कृष्ण बुधि मैं आये, क्यैं वह तौ भगवान है नहीं। वह तौ साकार मनुष्य है। भगवान तौ है एक ही निराकार। उनका भी पार्ट होना चाहिए ना। ब्रह्मा-विष्णु, शंखर को भी शरीर दे दिया है। अकालमूर्त शिव

को शरीर नहीं है। परन्तु उनका भी पार्ट तो होगा ना। <sup>2</sup>त्रिमूर्ति बनाते हैं उन में मुख्य शिव बाबा को डालते नहीं हैं। कहते भी हैं ब्रह्मा देवी-विष्णु देवता... बाकी शिव कहां गया। वह है ऊँच तै ऊँच भगवान्। उनको सभी याद करते हैं। ऐसा कोई मनुष्य नहीं होगा जो भक्ति मार्ग में उनकी याद न बरता हो। दुःख में ही सभी पुकारते हैं हे भगवान्, है लिवैटर। औ गाड़ फादर। क्योंकि वह है बैहद की आत्माओं का फ़ादर। जरूर बैहद का ही सुख देगा। हद का बाप हद का सुख देंगे। हद के सुख में है तो आत्मा बैहद के सुख देने वाले बाप की याद करती है। वह क्या सुख देते हैं यह कोई को पता नहीं है। बाकी याद जरूर करते हैं। बाप आते हैं कहते हैं बच्चों और हँग तोड़ एक बाप की याद करो। आत्मा ही सुख की याद करती है। यह भी बाप नै बताया है तुम देवी-देवता बन नई दुनिया में रहते ही वहां तो अपर सुख है। उन सुखों का अन्त नहीं पाया जाता। अभी थोड़े-ही तुम्हको पता पड़ता है कैसे सुख होगा। समझते हैं नई दुनिया में जरूर सुख हो होंगे। नये मकान में सुख होता है ना। पुराने मकान में दुःख होता है। तब तो बाप बच्चों के लिए नया पाकन बनाते हैं। नया बन कर तैयार होता है फिर बच्चों का बुधि योग नये मकान में लग जाता है। यह तो हुई हद जाते। अभी बैहद का बाप नई दुनिया बना रहे हैं। पुरानी दुनिया का दिनशाह होना है। जो भी कुछ देखते हो वह सभी कब्रियाल होना है। अभी परिस्तान स्थापन हो रही है। अभी तुम संगम पर खड़े हो। कोल्युथ तरफ भी देखते सकते ही, सत्युग तरफ भी देख सकते हो। कलियुग तरफ है अनैकधर्म। बहुत गन्द लगा पड़ा है। खान-पान आद सभी हैं भ्रष्टाचारी। फिर नई दुनिया है शैक्षाचारी। उनको कहा हो जाता है स्वर्ग बहिष्ठ। तुम संगम पर स्थापन साक्षी हो देखते हो। तुम देवता बनने लिए पुस्तार्थ कर रहे हो। सत्युग में सभी निर्विकारी होंगे। वहां है ही एक धर्म। प्रदर्शनी अथवा मुक्तियन में आते हैं तो वहां भी तुम संगम पर खड़ा कर दो। इस तरफ है कलियुग उत्तर तरफ है सत्युग। हम बीच में हैं। जानते हो बाप बैठ नई दुनिया स्थापन करते हैं। वहां तो वहुत थोड़े मनुष्य होते हैं। तो इतने सभी बापस जाने हैं। और कोई भी धर्म बाला नहीं आता।

रिक तुम ही पहले<sup>2</sup> आते हो। अभी तुम सत्युग में जो लिए पुस्तार्थ कर रहे हो। पतित तो कोई भी जा नहीं सकते। पावन बनने लिए हो भुजे पुकारा है। हे बाबा हमलो पावन बनाकर ह पावन दुनिया में ले चलो। ऐसे नहीं कहते हमको शान्तिधान ले चलो। पतित दुनिया और पावन दुनिया उनको ही कहा जाता है। हम आहार न नई दुनिया न पुरानी दुनिया के रहने वाले हैं। हम तो परमधार के रहने वाले हैं। उसको स्वीट-होम कहा जाता। अभी हमको घर जाना है जिसकी मुक्तिधान कहा जाता है। जिसके ही सन्यासी शिक्षा देते हैं। वह सुखधान का ज्ञान दे न रक्की। रहते हैं मुक्तिधान। तो जीवन मुक्ति का ज्ञान दे न रक्की। वह है निवृति भाग। तुम बच्चों को समझाया गया है कौन 2धर्म वाले कब 2 आते हैं। मनुष्य शृणि सी झाड़ में पहले<sup>2</sup> फ़ाउन्डेशन तुम्हारा है। बीज को कहा जाता है वृक्षपति। बीज का एक दाना बौद्ध जाता है फिर उन से कितना बूधि होती है। बाप कहते हैं मैं वृक्षपति ऊपर में निवास करता हूँ। जब झाड़ एकदम जड़-जड़ी भूत हो जाता है तब मैं आता हूँ। आदी सनातन देवी-देवता धर्म अभी नहीं हैं। जैसे मिसाल दिया जाता है बनीयन ट्रीं का। बड़ा हो बन्डर फुल झाड़ है। विग्रह फ़ाउन्डेशन बाकी सारा झाड़ बड़ा है। और कोई झाड़ विग्रह फ़ाउन्डेशन ऐसे हो नहीं सकता। इस बैहद के झाड़ में भी आदी सनातन देवी-देवता धर्म है नहीं। बाकी सभी छड़े हैं। पहले<sup>2</sup> एक धर्म था। दूसरा कोई था नहीं। सूर्यवंशी किंवद्दं = फिर चन्द्रवंशी था। चन्द्रवंशी को भी हेकड़ ग्रेड कहेंगे। क्योंकि पुराना हो गया ना। यह नालेज सारो बाप ही देते हैं। अभी तुम बच्चों को मूलवतन सूक्ष्मवतन भी याद है। हम मूलवतन के निवासी हैं। यहां हम पार्ट बजाने आते हैं। तुम बच्चे आलराउंड पार्ट बजाने वाले हो। इसलिए 84 जन्म है मैक्सीमैन। फिर मिनीमैन एक जन्म। मनुष्य लोग फिर कहते देते 84 लाख जन्म। वह भी कैसे होंगे, यह भी समझ नहीं सकते हैं। बाप आबर समझते हैं 84 जन्म तो तुम लैते हो। पहले<sup>2</sup> भी से तुम

बिछूड़ते हो। सत्युगी देवताएं ही पहले हीते हैं। जब सत्युगी देवताओं की फ़र्म आत्माएं यहाँ पार्ट बबवजाती हैं तो वाकी सभी आत्माएँ कहाँ चले जाते यह भी तुन बच्चे जानते हो। वाकी इतने सभी आत्माएं शान्तिधाम में रहता है। तो शान्तिधाम व्यक्ति अलग हुआ ना। वाकी दुनिया तो यही है। पार्ट सहाँ बनते हैं। वाकी वहाँ तो आहारे शान्तिधाम में रहती है। शान्ति तो आत्मा का अस्त्र स्वर्धम है। पिर यहाँ आते हैं पार्ट बनाने। नई दुनिया में सुख का पार्ट, पुरानी दुनिया में दुःख का पार्ट बजाना होता है। सुख और दुःख का यह खेल है। वह है ईश्वरीय राग्राम। दुनिया में कोई भी मनुष्य यह नहीं जानते कि यह सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है। न खयिता की न खना के आदि भैय अन्त को जानते हैं। इसलिए सभी को कहा जाता है नास्तिक। भल कोई भी सन्यासी उदासी पास जाओ वौलों खयिता और खना कापरचिय दौ तों कह देंगे सर्वव्यापी है। बड़ी ग्लानी की है। ८४ अत्मा २४ अवतार लैतैकल्प-मच्छ अवतार, वराहअवतार। क्या २ वार्ते सुनाते हैं। ४४ लाख योनियाँ हैं उनमें मनुष्य का एक जन्म ... वाप कहते हैं यह सभी रंग है। तुम्हारी शास्त्र के कोई ज्ञान का शास्त्र नहीं। वह सभी हैं भावत के शास्त्र शास्त्र। ज्ञान का शास्त्र संक भी नहीं। अगर कहे गीता, परन्तु उसमें तो ज्ञान है नहीं। वह भी भावत का शास्त्र है। अगर उसमें ज्ञान होता तो तुन वह पढ़ते २ सदगति को पाते। ज्ञान का सागर तो एक ही वाप को कहा जाता है। और कोई को सदगति का ज्ञान है नहीं। खयिता और खना के आदि भैय अन्त का ज्ञानशास्त्र आद भी नहीं है। मैं तुमको दुनिया हूँ। पिर यह प्रायः लौप्त हो जाता है। सत्युग में वह रहता नहीं। वह किसके पास आवें कहाँ से। भारत का प्राचीन खहराजयोग है उनका पुस्तक कोई नहीं है। एमआवजेक्ट कुछ नहीं। नाम खड़ते हैं गीतापाठ्याला। वैद पाठ्याला। एमआवजेक्ट कुछ भी नहीं। यह वैद-शास्त्र आद सभी हैं खना। यीता की खना। खना से दरसा नहीं नील स्कता। दरसा मिलता है स्मैवव्याख्यिता वाप से। हर एक मनुष्य क्रियटर है। बच्चों कौरचते हैं। वह है हड़ों के ब्रह्मा। यह है वैहड़ का ब्रह्म। वह भी इक्षित पिता यह भी पिता। वह है निराकार आत्माओं का पिता। वह लौकिक पिता। यह पिर है प्रजापिता। प्रजापिता कव होना चाहिए। क्या सत्युग में ? नहीं। पुस्तीलग संगम युग पर होनम् चाहिए। मनुष्यों को पता नहीं है मुँ संगम युग कव होता है। उन्होंने तो सत्युग कोलयुग आद को लाखों वर्ष दे दिये हैं। वाकी समझते हैं। १२५० वर्ष का युग होता है। स्वस्तिका होता है ना। सभी युगों की आयु बराबर होती है। ४४ जन्मों का भी हसाव चाहिए ना। हम कैसे उतरते हैं। सीढ़ी का भी हसाव चाहिए ना। पहले २ लाउन्डेशन में है दैती-देवताएं। उनके बाद पिर आते हैं इस्तामोः बौद्धो आद। वाप ने झाड़ का राज् भी बताया है। वाप के सिवाय तो कोई भी सिखला न रहे। तुम्हको कहेंगे यह चित्र आद कैसे बनाये, किसने सिखाया। वौलों घास में वाप दिखलते हैं पिर हम आकर बनाते हैं। पिर उसको वाप आकर के कैस्ट भी करते हैं। इस स्थ में आकर कैस्ट भी करते हैं ऐसे बनाओ। छुद ही कैस्ट करते हैं। कृष्ण को श्याम-सुन्दर कहते हैं परन्तु मनुष्य तो सभी नहीं कि क्यों कहा जाता है। यह वैकुण्ठ का प्राप्ति कथा तो गैरा था। पिर घांद छोड़ा अप्सरावन। इसलिए उनकी ही श्याम-सुन्दर कहते हैं। यह ही पहले आते हैं तेज त्वश्च। इन ८०नां की राजाई दलती है ना। आदी सनातन देवी देवता धर्म स्थापना कौन करते हैं यह भी किसकी पता नहीं। धर्मश्रद्ध, कर्मश्रद्ध यह ही होते हैं। अपन को आदी सनातन देवी-देवता धर्म हिन्दु कह देते हैं। हिन्दु हिन्दुस्तान के रहवाली। अपने धर्म की भूल जाते तो भारत की भूल देते हैं। वाप कहते हैं मैं भारत मैं ही आता हूँ। भारत मैं ही देवी देवताओं का राज्य था। जौ पिर प्रायः लौप्त हो गया है। मैं आता हूँ पिर से स्थापन कर वाकी और सभी धर्मों का विनाश कर देता हूँ। पहले २ ही ही आदी सनातन देवी-देवता धर्म। यह झाड़ है ना। झाड़ वृद्धि को दाता रहता है। नये पत्ने यठ-धूंध पंथ पिछड़ी में आते हैं तां उनकी शोभा ही जाती है। पिर अन्त में जब सारा झाड़जड़-जड़ी-भूत अवस्था को पातो है वह तब भी आता हूँ। यदा यदा हि ... आत्मा अपन को भी नहीं जानती तो वाप को भी नहीं जानती। अपन को भी गाली तो वाप को भी गाली, तो देवताओं को गाली छ देते रहते।

तभी धान वेसाहृ बन जाते हैं तब मैं आता हूँ। यह छोल है जो बाप बै० सज्जाती है। बाप अपना परिचय भी देते हैं कि मैं कैसे आता हूँ। यह भी अपने जन्मों को नहीं जानते हैं। इनके 84 जन्मों के अन्त के भी अन्त में जब इनके दानप्रस्त अवस्था होती है तब मैं प्रदेश करता हूँ। पतित दुनिया मैं ही आना पड़े। अनुष्ठ भी है पतित। उसमें भी नम्बरदान यह पतित। जिसमें मैं प्रदेश करता हूँ। परिं यही नम्बरदान मैं जावैगे। तुम भनुष्ठों की जैसे जीवेदान देते हो। अर्थात् अनुष्ठ से देवता बनते हो। सभी दुःखों हैं दूर कर भैते हैं। मैं शी आधा चक्र के लिए। गायन भी है बन्देमात्रश्च। कौन सी मातारं जिनकी बन्दना करते हैं। तुम मातारं हो हो जो सारी सृष्टि को वहिष्ठ स्वर्ग बनाती हो। भल भेत्स भी हैं परन्तु ऐजौरिटी माताओं को है। इसलिए माताओं की भीहमा करते हैं। बाप आकर तुमको भीहमा लायक बनाते हैं। पहले माता। पहले लक्ष्मी पर नाशयण। तुमको आगे बढ़ते हैं। तुम्हारा मान सन्यासियों ने गंवाया है। कहते हैं नारी नर्क का इतार है। तब तो खुद भागते हैं। हृद का सन्यास भी करते हैं। तुम्हारा है बैहद का सन्यास। पुरानो दुनिया को छोड़ नई दुनिया मैं जाते हो। तुम दुःखधार से दूखधार जाने लिए यहाँ आये हो। यह संगमयुग है कल्याणकारी। संगम युग जब कि अनुष्ठ पतित से पावन बनते हैं। तुम भी पतित थे। अभी पावन बनते हो। यह है श्रमावजैक्षण। नर से ना० बनना। सृष्टि का चक्र भी तुम समझ गये हो। बाप के सिवाय कोई समझा न है। सन्यारी लोग अभरी का विसाल देते हैं। वह कीड़े की आप समान बनाती है। परन्तु वास्तव में वह अभरी नहैं; तुम ब्राह्मणियां हो। वह लोग दृष्टान्त देते हैं अभरी कीड़े का। बाकी जानते कुछ भी नहीं। तुमको बाप समझते हैं तुम ब्राह्मणियां हो। शुद्ध हैं विष्टा के कीड़े। उनको तुम ज्ञान को भू०२ सिखालाकर डुड़ देबता बना देते हो। बाप केरे विसाल दे समझते हैं कहाँ वह सन्यासी लोगार्सेप्स कामी कर रिपीट करते हैं। अर्थ कुछ नहीं भूल जैसे समझते। यह राज् सारा तुम ही जानते हो। हृदारा स्थीटहोन वह है जहाँ से आये हैं पार्ट बजाने लिए। दैवीर्धि मैं खुब का पार्ट बजाते हैं पर दो कला कम होती जाती है। पर इवापर मैं रावण जाती है। वर्ध०२ रावण की पारते हैं गोदा रावण राज्य ठीक०२ है। कहते भी हैं राज्य नहीं है। राज्य सत्त्वुग के कहा जाता है। उनको कहा ही जाता है स्वर्ण। ऐसा ही कहते हैं भी स्वर्ण। ऐसे ही दिवापर की सेभी नर्क, कलियुग को विल्कुल रोख नर्क कहा जाता है। तो यह बैहद का बाप बैठ बच्चों को पढ़ते हैं। बाप भी हुआ तो टीचर भी हुआ और पर साथ भी ले जाते। सभी की सदगति करते हैं। उनको कहा जाता है सदगुरु अकाल मूर्ति। खुब से कहते भी हैं सदगुरु अकाल पूर्ति है। पर उनका काल नहीं आता। जिन को काल आता है पर उनको भी गुरु कह देते। भूल जाते हैं। बाप रचयिता को भी भूल जाते हैं तो स्वना को भी भूल जाते हैं। बाप अचके आकर सृष्टि चक्र के आद भृथ अन्त का राज समझते हैं। जिससे तुम चक्रवर्ती राजा बनते हो। तो तुम वच्चे स्वदर्शनचक्रधारी हो गये ना। स्वदर्शनचक्र की याद करने से भी तुम्हरे विकर्म विनाश होते हैं। यहाँ बैठते हो तो भी स्वदर्शनचक्रधारी हो बैठो। स्वदर्शनचक्र की भिलो। कहाँ भी काम आड़ पर बैठते हो तो स्वदर्शनचक्रधारी हो बैठो। अल्पमें को और सृष्टि चक्र को भी याद करो। चक्र की याद नहीं करें तो सिंफ मुक्ति को पावेंगे। चक्र की भी याद करें तो जीवनभूक्ति भिलेंगे। सिंफ बाप को नहीं, सृष्टि चक्र को भी याद करना है। स्वदर्शनचक्र भिलते रहेंगे तो तुम्हरे पाप करते रहेंगे। यह नालैज है। बाकी चक्र कोई चीज़ है नहीं। यह सारा वृथि का काम है। अस्त्वा पद् रही है। इसमें लिखने-पढ़ने की भी उरकर नहीं। सिंफ अपनक की अस्त्वा समझ बाप की याद करना है। सृष्टि चक्र का ज्ञान भी अन्दर मैं रहना है। बाप की भी वृथि मैं है ना। जिसको ही ज्ञान का सागर कहा जाता है। खुद समूर्ण पावन है। तुम भी बाप की याद करने से पावन और पर सृष्टि चक्र की याद करने हेचक्रवर्ती राजा बनते हो। अभी तुम्हसंगम युग दर बैठे हो। उस तरफ है कलियुग इस तरफ है स्तान्त्र। नर्क और स्वर्ग होता रहाँ ही है। उपर मैं नहीं होता। नई घृष्ट की स्वर्ण, जागी ही की नर्क कहा जाता है। अभी पुरानी दुनिया है ना। तब, न पराने मैं हो न, न ये मैं बैठे हो। संगम पर हो। अच्छा स्तानी बच्चों की बापदादों का याद प्यार गुडमौर्निंग। स्तानों बच्चों की नमस्ते।